पुस्तक : काशी मरणान्मुक्ति
लेखकद्वय: मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड़
प्रकाशन: शिव ॐ साईं प्रकाशन, 95/3, वल्लभ नगर, इन्दौर-3
पृष्ठ संख्या: 502
मूल्य: 501/-

ईश्वर, चाहे हम उसे कोई भी नाम दें सदा से अज्ञात, रहस्यमय, शब्दातीत रहा है। उसकी सत्ता को महसूस तो किया जा सकता है पर उसे इन आंखों से न तो देखा जा सकता है न ही वाणी से अभिव्यक्त किया जा सकता है। वह साधक के अनुभव करने का विषय है फिर भी हर उस साधक ने जिसने उसे महसूस किया, जाना, समझा अपनी-अपनी तरह से अभिव्यक्त करने का प्रयास अवश्य किया है। यह 'गूंगे के गुड़' जैसी बात है। गूंगा गुड़ के स्वाद को तो महसूस कर सकता है पर उसे वाणी या अन्य चेष्टाओं द्वारा पूर्णरूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकता। आध्यात्म हमें मानव से देवत्व की ओर ले जाता है। यह हमें बंधन से बंधनमुक्त कराता है तथा देह से विदेह करता है। यही कारण है कि हर युग, हर काल, हर धर्म, मत-सम्प्रदाय में उस अज्ञात को जानने पाने के लिए साधक अपनी-अपनी तरह से प्रयासरत रहे हैं। भारतीय दर्शन चिंतन ऐसे महापुरुषों, संतों, पीर-फकीरों के अनुभवों व वाणियों से भरा हुआ है।

'काशी मरणान्मुक्ति' उपन्यास की विषय वस्तु भी यही आध्यात्म है। इसे लेखकद्वय मनोज ठक्कर व रश्मि छाजेड़ ने मिलकर लिखा है। इस उपन्यास का नायक महा है जो ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण व श्रद्धा के कारण एक दिन उस परम दिव्यता को प्राप्त हो जाता है। कबीर के जीवन से अनेक साम्यता लिए उपन्यास का नायक महा एक परित्यक्त बालक है जिसे उसके माता-पिता जन्मते ही महाश्मशान मणिकर्णिका पर छोड़ जाते हैं। निःसंतान यशोदा व राघव उस अनाथ बालक को अपनाकर उसका पालन पोषण करते हैं। वे बालक को शिक्षा दिलाना चाहते हैं पर बालक तो जन्म से ही वैराग्य की शिक्षा लिए है। उसे सांसारिक राग-रंग की बजाय महाश्मशान की नीरवता आकर्षित करती है। शायद यह उसके पूर्वजन्मों का योग ही है जो उसे परमात्मा की राह में लगाए रखता है तथा सच्चे गुरु की तलाश में लगाए रखता है जो उसे परम सत्ता से मिला सके। पूरे उपन्यास में हमें महा के भीतर की यही प्यास व तड़प नजर आती है। संक्षेप में कहें तो जीवन की अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं, उतार-चढ़ावों व मोड़ों से गुजरते हुए यह उपन्यास के नायक महा की महानायक बनने की कथा है।

उपन्यास का एक विशेष आकर्षण व विशेषता प्रत्येक अध्याय के आरंभ में काशी व बाबा विश्वनाथ के वैशिष्ट्य का वर्णन व गुणगान है। यह न केवल उपन्यास के अध्यायों को पढ़ने के लिए उत्सुकता पैदा करता है वरन् काशी की महिमा व उसकी विशेषताओं को भी रेखांकित करता है। साथ ही साथ इसमें काशीपति बाबा विश्वनाथ की विशेषताओं, गुणों व विभिन्न नामों का उल्लेख पाठकों का ज्ञानवर्धन करता चलता है। उपन्यास की एक विशेषता यह भी है कि प्रत्येक अध्याय एक वाक्यांश- "पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं" के साथ विराम लेता है।

लेखकद्वय ने उपन्यास के अन्य पात्रों को भी पूरी समग्रता व सूक्ष्मता के साथ उभारा है तथा वे उपन्यास के कथानक को न केवल रोचक बनाते वरन् उसे आगे बढ़ाने में अपना पूरा-पूरा योगदान देते हैं। उपन्यास की मुख्य घटनास्थली क्योंकि काशी है अतः स्वाभावतः इस उपन्यास में काशी के घाट, घाट, गलियों व बाजारों के अतिरिक्त वहां की जीवन शैली व संस्कृति को भी बड़ी सूक्ष्मता से उभारा गया है। पाठक को उपन्यास पढ़ते समय यह महसूस होता है कि वह स्वयं घटना स्थल पर मौजूद है यह इन उपन्यासकारों की सफलता है। काशी के अतिरिक्त यह उपन्यास महा के द्वादश ज्योतिर्लिंग की दर्शन यात्रा के साथ-साथ पाठकों को बड़ी रोचकता व सजीवता से उन स्थानों के महात्म्य को समझाते हुए उनके दर्शन करवा देता है। यह उपन्यास अंततः महा के उस परमसत्ता में विलय के साथ ही पूर्णता प्राप्त करता है।

वास्तविकता तो यह है कि लेखकद्वय ने इस उपन्यास का जो ताना-बाना गढ़ा, जो कथानक रचा उसका उद्देश्य एक उपन्यास को लिख लेने मात्र से काफी अधिक है। वे पाठक को न केवल उस परमात्मा के चिंतन के लिए प्रेरित करना चाहते हैं बल्कि यह भी चाहते हैं कि पाठक स्वयं भी उस मार्ग पर चलने के लिए तैयार करें जो उसे ईश्वर प्राप्ति की ओर ले जाता है। यही कारण है कि उपन्यास में इसके स्थूल कथानक के अतिरिक्त बहुत सा अनकहा है जिसे समझे बिना पाठक इस उपन्यास की आत्मा को महसूस नहीं कर सकता।

इस उपन्यास को पढ़ते हुए मुझे लगा कि इसकी भाषा

कहीं अधिक संस्कृतनिष्ठ व कठिन हो गई है जो संभवतः सामान्य पाठक के लिए अनुकूल न हो और वह इसका सम्पूर्ण रस न ग्रहण कर सके। यदि इस ओर ध्यान दिया जाता तो शायद यह आम पाठक के लिए भी अधिक ग्राह्य बन पाता।

आवरण से लेकर मुद्रण व प्रस्तुति तक सभी आकर्षक व रोचमुक्त है। उपन्यास अपेक्षाकृत बड़े आकार-प्रकार के बावजूद अपने कथानक की रोचकता सरसता के कारण पाठकों को अंत तक पढ़ने पर मजबूर कर देता है जो निःसंदेह लेखकों की सफलता ही कहा जाएगा। वास्तव में यह उपन्यास केवल पढ़ने के लिए नहीं है। इसका सही उद्देश्य व सफलता इसी में है कि पाठक इसे पढ़कर सोचें, मनन करें व स्वयं को उस परम सत्ता से मिलने के लिए तैयार करें। ऐसे रोचक, महत्वपूर्ण व चिंतन परक उपन्यास के लेखन के लिए लेखकद्वय मनोज ठक्कर व रश्मि छाजेड़ बधाई के पात्र हैं।

पत्रिकाः शैल सूत्र
प्रधान संपादिकाः आशा शैली
संपादिकाः कुहेली भट्टाचार्य
अतिथि संपादक : बुद्धिनाथ मिश्र
संपर्कः कार रोड, बिन्दु खत्ता,
पो. लाल कुंआ, जिला-नैनीताल,
(उत्तराखण्ड) 262402
पृष्ठ संख्याः 76
मूल्यः 25/-

'शैल सूत्र' हिन्दी साहित्य की उन पत्रिकाओं में से एक है जो किसी सरकारी अनुदान या बड़े औद्योगिक समूह की अनुकम्पा पर नहीं चलती। शैल सूत्र लगभग 5 वर्षों से वरिष्ठ कवयित्री- साहित्यकार आशा शैली के सद्प्रयासों से निकल रही है। यूं तो मुझे शैल सूत्र के अनेक अंक देखने-पढ़ने का अवसर मिलता रहा तथा इस पत्रिका की सम्पादिका आशा शैली से भी मिलने का मुझे कई बार अवसर मिला। पर इस बार के वर्ष 5 का जुलाई-दिसम्बर 2012 संयुक्तांक ने विशेष रूप से मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। इसका एक विशेष कारण यह है कि शैल सूत्र का यह अंक अपनी आयु के 70 से अधिक वर्ष पूरे कर चुकी इसकी सम्पादिका-प्रकाशक आशा शैली पर विशेष रूप से केन्द्रित है। कई दशकों से साहित्य की अनेक विधाओं में लेखनरत आशा शैली के जीवन व लेखन पर प्रकाश डालता।

पत्रिका इस तरह के व्यक्ति-विशेष पर केन्द्रित विशेषांक उस साहित्यकार के जीवन के अज्ञात पहलुओं व उसके लेखन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। आशा शैली पर केन्द्रित शैल सूत्र के इस विशेषांक में सम्पादकीय के रूप में बुद्धिनाथ मिश्र का महत्वपूर्ण लेख है ही साथ ही इसमें उमी कृष्ण, सगीर अशरफ, सुदर्शन डोगरा, आनंद गोपाल सिंह बिष्ट, डॉ. रमा सिंह, मंजू पांडेय 'उदिता', 'अर्श' अमृतसरी, कुहेली भट्टाचार्य, रेखा चन्दा 'संध्या', डॉ. चंद्रप्रकाश प्रजापति 'अंकुर', ध्यानसिंह भागटा, विनय सागर जायसवाल, विश्ववाणी डॉ. कामना कमलेश, डॉ. राष्ट्रबंधु, कृष्ण चन्द्र महादेविया, डॉ. उमेश नन्दन सिन्हा, अंजना 'सवि', सैली बलजीत, अंजु शर्मा, प्रेम पाण्डे, पुनुस मलिक नक़्वी व रोशन जायसवाल 'विक्षिप्त' के छोटे-बड़े लेख हैं। ये लेख वरिष्ठ साहित्यकार-कवयित्री आशा शैली के जीवन, संघर्ष, जिजीविषा, टूटन, आशा-निराशा के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। इसके अतिरिक्त इन लेखों में उनके लेखन के विभिन्न पहलुओं व विशेषताओं पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। साथ ही इनमें उनके सम्पादकीय कौशल का भी पता चलता है। इस अंक में जमीला सगीर द्वारा आशा शैली के उपन्यास 'छाया देवदार की' पर एक नजरिया के रूप में प्रकाशित है तथा आशा शैली के व्यक्तित्व को उजागर करती हबीब हसरत राणीखेतवी की एक कविता तथा उनके जीवन के विविध पलों को दर्शाते छायाचित्र भी प्रकाशित किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रकाशित होने वाले अन्य सभी स्थायी स्तम्भ यथा गज़लें, कविता, कहानी, लघु कथा, बाल कलम, साहित्य समाचार, समीक्षा आदि तो हैं ही। इस अंक में लक्ष्मीशंकर वाजपेयी का गीत 'कदम-कदम दहशत के साये, जीते हैं भगवान भरोसे' व कृपाशंकर अचूक की गज़ल 'कर दिए अपने बिगाने वक़्त ने' व खुशाल खन्ना की गज़ल 'हर हर कदम पे देख चुके आज़मा के लोग' विशेष रूप से अच्छे लगे। इस प्रकार के विशेषांक निश्चित रूप से हमें उस साहित्यकार को व उसके रचना संसार को जानने-समझने में विशेष सहायक होते हैं। इसके लिए बुद्धिनाथ मिश्र बधाई के पात्र हैं। मुझे तो शैल सूत्र का आशा शैली पर विशेष यह अंक अच्छा लगा ही। मुझे विश्वास है कि आशा शैली व उनकी रचना धर्मिता को जानने व समझने की इच्छा रखने वाले पाठकों को भी यह अंक अच्छा लगेगा। इसी विश्वास के साथ। ■

– शशिकांत